सत्र शुरू होनेके बाद भारतीय बैडमिंटनकी तकदीर बदलेगी।

श्रद्धांजलि कैप्टन भिंडरको

श्रद्धांजलि- बीते सप्ताह एक अत्यन्त दुखद घटनामें कालके क्रूर हाथोंने भारतीय खेल जगतके एक सितारे कैप्टन एम.एस. भिंडरको छीन लिया। घुड़सवारीमें अपनी पहचान कायम कर चुके कैप्टन भिंडर पिछले शुक्रवारको राजधानीके उपहार सिनेमाघर अग्निकांडके शिकार हो गये। कैप्टन भिंडरने हाल ही में राष्ट्रीय खेलोंमें घुड़सवारीकी सभी स्पर्धाओंमें भाग लिया तथा तीन स्वर्ण एक रजत और एक कांस्य पदक जीता था। शो जम्पिंगमें उनका प्रदर्शन बहुत ही अच्छा रहा। उन्होंने अपने प्रिय घोड़े फारोके साथ इस वर्षके शुरूमें मुंबईमें हुई राष्ट्रीय प्रतियोगितामें भी पदक जीते थे।

कैप्टन भिंडर अपने साथी अधिकारियोंके बीच अत्यन्त लोकप्रिय थे। उपहार त्रासदीके समय भी उन्होंने सैनिकका 'फर्ज' नहीं भूला तथा लोगोंकी जान बचानेकी खातिर सिनेमाघरके भीतर ही रूके रहे। अग्निकांडमें उनकी पत्नी और पुत्रकी भी जान गयी।

कैप्टन भिंडरकी निगाहें अगले वर्ष 'एशियाड' पर टिकी थीं और देशको उनसे पदककी भी उम्मीद थी। कैप्टन भिंडरको हार्दिक श्रद्धांजलि।

...मिण्टनमें हलचल

घायल तिलकरत्नेकी जगह संजीव रणतुंगा टीममें

किंग्सटन (जमैका), २० जून। वेस्टइंडीज तथा श्रीलंकाका दूसरा तथा शृंखलाका अंतिम टेस्ट मैच यहां मार्नोस वेलमें शुक्रवारको शुरू हुआ।

दोनों टीमोंने पहला टेस्ट खेलनेवाली टीममें एक-एक परिवर्तन किया है। वेस्टइंडीजकी टीममें रीफरकी जगह राबर्ट सैमुएल्सकी वाप्सी हुई है जबकि श्रीलंका एकादशमें घायल हसन तिलकरत्नेकी जगह कप्तान अर्जुन रणतुंगाके अनुज संजीव रणतुंगाको शामिल किया गया है। तिलकरत्नेका दाहिना हाथ पहले टेस्टके दौरान एक बाउंसर खेलनेमें टूट गया है। ज्ञातव्य है कि पहला टेस्ट वेस्टइंडीजने तीन दिनोंमें ही ६ विकेटसे जीता

धमाकेदार विजय

बंगलौर, २० जून (वा.)। क्वालिफायर भास्कर चौधरी (असम), ने चौथी वरीयता प्राप्त आर. जी. अरविंद (कर्नाटक) पर आज यहां ४-६, ६-१, ७-६, ७-६ से सनसनीखेज जीत दर्ज कर एम्बैसी ओपन स्टेट रैंकिंग टेनिस टूर्नामेंटके सेमीफाइनलमें जगह बना ली।

शीर्ष वरीयता प्राप्त गौरव नाटेकर (महाराष्ट्र) ने कार्तिकेयन (तमिलनाडु) को ६-०, ६-१ से आसानीसे हरा कर अंतिम चारमें प्रवेश किया।

भास्कर और अरविंदके बीच संघर्षपूर्ण मुकाबला लगभग तीन घंटेतक चला।

अन्य क्वार्टर फाइनल मैचोंमें कर्नाटकके रवि किरण भट्टने तमिलनाडुके राजकुमार गोपालनको ६-०, ६-२ से और तमिलनाडुके विनोद श्रीधरने कर्नाटकके के. एस. गिरीशको ७-५, ६-३ से हराया।

कल समीफाइनलोंमें गौरवका मुकाबला रवि किरण भट्टसे और भास्करका मैच श्रीधरसे होगा।

राष्ट्रीय अथलेटि...

नयी दिल्ली, २० जून (वा.)। अनुभवी फर्राटा धाविका पी.टी.उषाका नाम २१ जून से पटियाला और बंगलौरमें शुरू हो रहे राष्ट्रीय सीनियर प्रशिक्षण शिविरके लिए भारतीय अमेच्योर अथलेटिक महासंघकी ६२ अथलीटोंकी सूचीमें शामिल है। यह शिविर अगले सालके बैंकाक एशियाई खेलोंके लिए तैयारीके सिलसिलेमें लगाया जा रहा है।

महासंघके सचिव ललित मनोतने आज यहां बताया कि शिविरके लिए अथलीटोंका चयन राष्ट्रीय खेलोंमें उनके प्रदर्शनके आधारपर किया गया है। सैंतीस पुरुषों और २५ महिलाओंकी इस सूचीमें शाइनी विल्सनका नाम नहीं है। पूरी सूची इस प्रकार है-

६० प्रमुख अथलीटों... शाइनी विल्सनको स्थ...

पुरुष-... सिंह, सिद्धार्थ ... संजीव प्रधान, ... ४०० मीटर, के... अमरीश कुमार ... नायर, एस गो... १००० मीटर। ... मनजिंदर ... १००, ११० मी... सिंह, योगेश कु... हरदेव सिंह, ... कुमार, अजीत ... चक्का फेंक, ... प्रकाश, दनविंद...

अन्तर...

वाराणसी, ... क्लब, मंद्रास ...

बृजेश ... वस बाल...

वाराणसी ... विश्वविद्याल... पैराडाइज क्लब ... स्मारक कैनवस... जूनसे होगी। ... अपवर्ड फाइनें... हालही में एक ... प्रतियोगि... मैदानपर सायं ... या सन वीडियो...

टेलीविजन

२१ एवं २२ जून

रोजनामचा

क्रान्ति की लहर
वा
कन्या का अपमान

एक आना

स्वामी मनोहरदास

बाम्बे में मनाए गए सिन्धी समाज सेवा सम्मेलन में रविवार तारीख १८ मार्च १९५६ को श्री स्वामी लीलाशाह जी महाराज के परमशिष्य स्वामी श्री मनोहरदासजी का भाषण।

पूज्य सभापति जी ! परम पूजनीय सद्गुरु महाराज ! तथा जगत् के गुरु कहलाने वाले भारतीय भाइयो व बहिनों !

आज मैं अपना अहोभाग्य मानता हूं कि जो श्री सद्गुरु महाराज जी की प्रेरणा से व स्वामी श्री गणेशदासजी महाराज के सभापतित्व में मनाए जा रहे इस महायज्ञ में मुझे भी अपनी आहूती डालने का सुअवसर मिला है।

मुझे इस बात का सदा गर्व रहा है कि इस शरीर का जन्म उस भारत देश में हुआ है, जो सदा संसार का मोक्षदाता रहा है। सदा शक्ति व सदाचार का पथप्रदर्शक तथा अध्यात्मविषय में जगद्गुरु रहा है।

जिस भारत देश में सदा से सन्त महात्मा ज्ञानी विज्ञानी, देशभक्त व प्रभुभक्त आदि रत्न उत्पन्न होते आए हैं, जिस

समाज ने सदा से 'प्राण जायं पर वचन न जाई' सिद्धान्त का पूर्ण रूप से पालन किया है। जिस देश ने धर्म के मुक़ाबले में सांसारिक विषयों को तुच्छ मानकर हर परिस्थिति में धर्म का ही पालन किया है। जब जब धर्म संकट आए हैं तब तब भारत ने प्राण व धन आदि की बाज़ी लगाकर भी धर्म को ही बचाया है।

अभी नूतन उदाहरण हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के बटवारे के समय का है। जहां जहाँ पाकिस्तान हुआ जैसे सिन्ध पंजाब व बंगाल, वहां से हिन्दु लोग अपने धन वैभव, जायदाद व जिनमें उन लोगों ने बड़े आराम से जीवन बिताया उन महल मकानों को, जिनमें छोटे होकर बड़े हुए उन गाँवों व नगरों को सहसा छोड़कर शरणार्थी कहलाए।

कितने भाइयों व संबन्धियो का खून बहा। कुछ समय के लिये कुछ लोगों ने तो कैम्पों में बैठकर अनाथों का जीवन बिताना भी स्वीकार किया। लखपति से कखपति बनने पर भी मन को विचलित नहीं किया। यहाँ आकर एक दूसरों से सैकड़ों मील दूर रह कर अपने मिले हुए प्रेममय जीवन को भी ठोकर लगाया। आर्थिक स्थिति के अत्यन्त दुःख जनक रहने पर भी पाकिस्तान जाना स्वीकार नहीं किया।

आखिर ये सब बलिदान किसके लिये हुए? यह सारा जीवन परिवर्तन किसके लिये हुआ? केवल अपने धर्म की रक्षा के लिये। उन्हें यह निश्चय था कि वहां रहने पर उनका हिन्दुत्व व भारतीयत्व शुद्ध नहीं रह सकता। वहां रहने पर उनके बहू बेटियों की इज्जत की रक्षा होना बड़ा कठिन था। स्त्री जाति के सम्मान-भंग की सम्भावनाएं थीं।

किन्तु आज वड़ खेद से कहना पड़ता है कि जिस धर्म को कायम रखने के लिये जिन माताओं व कन्याओं का अपमान आखों से न देखने के लिए हमने इतने वलिदान किये शरणार्थी कहलाए इतना धन व वैभव कुर्वान किया आज उन कन्याओं का अपने ही दहेज आदि कुप्रथाओं से हो रहे घोर अपमान का विरोध करने के लिये यह सिन्धी समाज सेवा सम्मेलन वुलाया जा रहा है।

वड़े दुःख से कहना पड़ता है कि जिस ने सदा स्त्री जाति को आदर की दृष्टि से ही देखा है, जिस समाज का 'यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तत्र रमन्ते देवता:'' का सिद्धान्त रहा है। जिस समाज ने 'मातृदेवो भव पितृदेवो भव....'' आदि देवों की गिनती में पहला देव (पूजनीय गुरु) माता को माना है। आज उसी देश में उन्हीं भावीमाताओं (कन्याओं) का इतना असह्य अनादर! इतना घोर अपमान!

आज जब विवाह की बातें चलती हैं तो कन्या कितनी ही लज्जाशील, गुणवती सदाचारिणी, गृहशिक्षासंयुक्त, नम्र व गृहलक्ष्मी वनने के योग्य क्यों न हो किन्तु धन के नशे में चूर कर्तव्य अकर्तव्य के ज्ञान से शून्य वर्तमान दहेज कुप्रथा के कुसंस्कारों से रंगे हुए लड़कों के पिता, कन्याओं के उन सद्‌गुणों की उपेक्षा करते हुए उन गुणों के बारे में कुछ भी गंभीर वातचीस न करते हुए भिखारी बन कर अपने पुत्रों के विक्रेता व्यापारी बन कर, शास्त्र मर्यादा का कुछ भी विचार न करते हुए दहेज मांगने से होने वाली भयंकर हानियों को नज़रन्दाज़ करते हुए, निर्लज्ज होकर कन्याओं के पिताओं से कह देते है कि "अपना आपस में संबन्धी होना है तो अच्छा किन्तु आप दहेज में देंगे कितना? जैसे कोई

सौदा हो रहा है। अरे! यदि कोई सौदा करके लड़का बेचना ही है तो फिर लड़के को कन्या के पिता के पास ही रहना चाहिये और खरीदे हुए सेवक की तरह उसे ही कमा कर खिलाना चाहिये; न कि अपने पिता को। फिर अपने पिता के घर क्यों जाता है ?

यदि वह कन्या का पिता सामाजिक परिस्थितियों से मजबूर होकर क्रोध को किसी प्रकार पीकर, हृदय पर पत्थर धर कर कह देता है कि "हम से जो दो तीन हजारों की सेवा होगी वो हम करेंगे ही।" तो एक दम वे चौंक उठते हैं "क्या? केवल दो तीन हजार! अरे! कितने लोग तो मेरे पुत्र को देखकर सात आठ हजार तो यों ही कह देते हैं।" जैसे कोई उनके पुत्रों की यदि बीच बाजार में नीलाम की तरह बोली हो तो उन पर लोग दस बीस हजार भी देने के लिये तैय्यार हो जावेंगे।

बड़े शर्म की बात है। जो पिता कन्या के पालन पोषण में हजारों रुपये खर्च करके, उसे सुशिक्षा प्राप्त करवा करके, उसे गुणवती बना करके कितनी मुसीबतें झेल करके उ सएक व्यक्ति के जीवन को सदा के लिये तुम्हें अर्पण कर रहा है, जो अपने जीवन का एक अंग आपको समपर्ण कर रहा है, जो अपने खून से सिंचा हुआ एक पौधा आपको भेंट कर रहा है, उसकी इतनी ! तोहीन उससे अदेय पैसे मांगकर इतना मानवता का मर्दन !

ऐ लोभी पिता व माताओं ! एक व्यक्ति का जीवन मिलने पर भी, फिर हाथ की मैल पैसे की भीख मांगते हुए आखों में लज्जा भी नहीं आती? जिह्वा कुछ हिचकती भी नहीं? हृदय में कुछ संकोच भी नहीं होता? क्या आज का मानव पत्थर का हो गया है ? अथवा आज स्त्री जाति को एक पशु मान कर अपने को ही केवल मानव समझ रहे हो?

अरे! यदि कोई हमें पशु भी समर्पण करता है तो हम उसके कितने कृतज्ञ होते हैं। यहाँ कृतज्ञता तो दूर रही पशुता भी शर्मा रही है।

इस प्रकार के पाशविक आचरण का कन्याओं के हृदयों पर कितना कुप्रभाव पड़ेगा? क्या वे अपनी स्त्री जाति पर रोवेंगी नहीं? क्या अपने को कन्या देखकर उनका हृदय फटेगा नहीं? क्या वे तुम्हारे पुरुषपन को धिक्कार की नजर से नहीं देखेंगी? क्या उनके हृदयों से निकली हुई आहें तुम्हें भस्म नहीं कर सकेंगी।

याद रखो! कन्याओं व कन्याओं के पिताओं के हृदयों का खून चूसने वाले नवजवान व नवजवानों के पिताओ! यदि भारतीय कन्याओं का कन्यात्व भंग हुआ, यदि उनकी लज्जा को आंच लगने लगी, यदि भारतीय नारी का भारतीयत्व नष्ट हुआ, यदि सतियों का सत् भंग हुआ, यदि भारत का पवित्र धर्म डुलने लगा, यदि भारतीय नारी पर आत्महत्या के लाँछन लगे, तो कान खोल के सुनो धनान्ध दहेज की बोली करने वालो! इन सभी पापों का फल तुम्ह भोगना पड़ेगा। इन सभी कुकर्मों के जुम्मेवार तम्हीं बनोगे। सतियों के सत् भंग होने का काला कलंक तुम्हीं पर लगेगा। आंख फाड़ करके देखो आज तुम भारत को क्या बनाए जा रहे हो। जरा सिर ऊंचा करके देखो, कि भारतीय ऋषियोंकी आतमाएं, भारतीय पूर्वजों की आत्माएं, तुम्हें किस प्रकार धिक्कार की नजर से देख रही हैं।

यदि भारत में किसी प्रकार भी स्त्री जाति में विप्लव (Revolution) हुआ तो इतिहास की काली लकीरों में भारत को बदनाम करने वाले तुम ही रहोगे। हिरण्यकशिपु, रावण कंस व दुर्योधन आदि क साथ तुम्हारा ही नाम राक्षसों की लिस्ट में

लिखा जायगा। पहले भी कोई राक्षसों को सींग थोडेही होते थे। इस प्रकार धन के लोभ में, अहंकार वश अथवा काम के नशे में चूर होकर उन्होंने अबलाओं का सत् भंग करने के लिये, उनकी इज्जत लूटने के लिये, जो प्रयत्न किये, उन्हीं से उनको राक्षस कहा जाता है।

याद रखो! जब जब भारत की नारी का अपमान हुआ है तब तब कोई न कोई ऐसी शक्ति अवश्य जगी है जिसने भारत क्या विश्व में विप्लव मचा लिया है।

द्रोपदी पर हाथ उठाने पर कृष्ण जैसी एक महा शक्ति ने अवतार लिया और संसार में महाभारी युद्ध छिड़ गई तथा हाथ उठाने वालों का सर्वस्व नष्ट भ्रष्ट हो गया। जब सीताजी के सतीत्व पर आक्रमण हुआ तब रामायण का बड़ा भारी युद्ध कांड हुआ। और आज यदि तुम कन्याओं का अनादर करोगे तो कहीं ऐसा न हो कि तुम लोग भारत क्या सारे संसार मे अशान्ति की आग फैला डालो।

अरे! यदि संसार के गुरु भारतीय जनता को भी लोभी व विषयी बना डालोगे तो फिर संसार किस रसातल में जायगा? क्या अपनी गुरुपद्वी को भी हाथों से छिनवाना चाहते हो? अपने स्वरूप को पहचानो। अपने पवित्र भारतीयत्व को सुरक्षित रखो। संसार का पथप्रदर्शन करते हुए पुनः पूजनीय बनो। अपने वैदिक ज्योति से संसार को रोशन करो। स्वयं उस ज्ञानमार्ग पर चल कर परम शान्ति को प्राप्त करो और संसार को शान्ति का संदेश सुनाओ।

याद रखो! जिस समाज में माताओं का, अबला कन्याओं

का आदर नहीं होता वह समाज कभी भी सौ युगों में भी उन्नत नहीं वन सकती। जिस समाज में स्त्री जाति का अपमान होता है जो जाति भावी माताओं की अवहेलना करती है वह जाति वह देश वह राष्ट्र वीर व धीर पुरुषों को देशभक्त व प्रभुभक्तों को विद्वान् व कलाकारों को, उन्नत व उदात्त पुरुषों को कभी भी जन्म नहीं दे सकता।

अरे! जिन के उदरों से तुम देश रत्नों को महापुरुषों को जन्म देना चाहिते हो, जिनकी कुक्षि से भारत को उज्ज्वल करने वाले सुपुत्रों को प्राप्त करना चाहिते हो, जिन भावी माताओं को सबसे पहिला गुरु, सब से पहिला शिक्षक, सब से पहिला सुसंस्कारों का आह्वान करने वाला आचार्य बनाना चाहते हो, उन कन्याओं का इतना तिरस्कार! उन माताओं की इतनी उपेक्षा और अवहेलना! महती मूर्खता। घोर अज्ञान। भयंकर प्रमाद। सुख व शान्ति को लात मारने का महा अनाड़ी उत्साह।

क्या आप इस प्रकृति के नियम से बिल्कुल अपरिचित हैं कि "Necessity is the mother of invention" अर्थात् आवश्यकता गवेषणा की माँ है। दुनियां में उसी चीज की खोज व बढोत्री होती है जिसकी आवश्यकता व मांग हो।

अब हम आप ही से पूछते हैं कि आप लोग अपने घरों में सब की सेवा करने वाली नारी चाहते हो कि सब को नौकर बनाने वाली नारी चाहते हो, आप एक पतिव्रता व सदाचारिणी स्त्री चाहिते हो कि परपुरुषासक्त व शीलभ्रष्ट नारी चाहते हो, आप घर को संभालने वाली और शक्त्यनुसार खर्च करने वाली धर्मपत्नी अथवा बहू चाहिते हो कि घर को नरक बनाने वाली, सदा झगड़ने

वाली और दिवालिया बनाने वाली स्त्री चाहिते हो। अथवा चाहते हो कि चाहे हमें स्त्री कैसी ही कुलटा, शीलभ्रष्ट, परपुरुषासक्त हो किन्तु साथ में केवल पैसा जरूर मिलना चाहिये।

ऐसा कौन मूर्ख होगा जो पाप के पैसे के लोभ में आकर अपने जीवन को नरक बनाएगा? केवल ऊपर के तथा उसी समय नष्ट हो जाने वाले क्षणिक द्रव्य के लिये अपने भविष्य को कौन अन्धकारमय बनावेगा।

नवजवानो! आप का भविष्य आप के हाथों में है। आप चाहे इस दहेज रूप विक्रय की कुप्रथा को नष्ट करके अपने तथा भारत के भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हो। चाहे अपने लोभी माता पिताओं के बहकाने में आकर अथवा स्वयं धन के लोभ में फंस कर, अपने जीवन का दीपक हाथों से बुझा सकते हो।

माता पिताओं को जो विवाह करना था वह कर लिया। उन्हें जो लड़के लड़कियों का सुख दुःख सामाजिक प्रथाओं के अनुसार भोगना था वह भोग लिया। अब अपने भविष्य का निर्माण आप ही को करना है। यदि आप नवजवान भी इस दहेज रूप विक्रय को सीधे अथवा टेढ़े रूप से अपनाओगे, तो कल यदि तुम्ह ही पांच छः कन्याएं उत्पन्न हो जायें तो तुम्हारा क्या हाल होगा। अतः अपने पावों पर अपने आप कुलहाड़ा मत मारो। दूरान्देश बनो। अपने भविष्य जीवन पर दृष्टि डालो। लड़कपन, जवानी व धन के नशे में आकर समाज से द्रोह मत करो।

अरे! जो लोभी माता पिता आपके विवाह जैसे शुभ अवसर पर भी यदि तिजोडी के किवाड नहीं खोलते, जो तुम्हारे भविष्य निर्माण के मुहूर्त पर भी यदि तुम पर धन को न्योच्छावर नहीं

कर सकते तो वह कौनसा समय आवेगा जो लड़कों के पिता लड़कों की खुशी में अपनी खुशी का प्रदर्शन करेंगे।

और यह भी मत भूलना कि जो कन्या के पिता के पेट पर लात मार कर, उनकी दूसरी कन्याओं की आहों को लेकर, उनको विवश करके जो पैसा आप लूटेंगे, वह लूट का पैसा इस प्रकार लुट जायगा कि आपके पैसे व इज्जत को भी लूट कर ही चैन लेगा। और स्पष्ट देखा गया है कि दहेज के कलंक से कलंकित वह पाप का पैसा वैसे ही निरर्थक बातों में नष्ट होकर, मानों वह पैसा उस शुभ अवसर पर, गरीबों की कन्याएं, जिनको उस पैसे ने रोक दिया है, उनकी आँहों से, हृदयों से निकली हुई धुंधली मूक पुकारों से, पञ्चत्व (मृत्यु) को प्राप्त होकर विवाह के बाद दुःखदायक भयंकर भूत बन कर, सारे घर में अशान्ति की जाल बिछोकर, उन बहुओं के तीखे व असह्य वाक्बाणों से सासु व ससुरों के हृदयों को चीरता हुआ, उन पापियों से पश्चात्ताप कराता हुआ उनके जीवन को दुःखमय व दयनीय बना डालता है।

अरे! जिस कन्या के पिता को कर्जदार बनाकर, जिस कन्या के पिता के पेट पर लात मार कर उसे दिवालिया बना कर, तुम विवाह करोगे; तो क्या वह कन्या अपने पिता का बदला तुम से नहीं चुकाएगी? क्या उस कन्या को अपने पिता के लिये हृदय में प्रेम व इज्जत नहीं है? क्या वह अपने पिता के दुःख को अपना दुःख नहीं मानेगी? क्या वह उस कराल काल(समय)को भूल जायगी जिस में तुमने उनके घर में ऊपर से खुशी और अन्दर में शोक के सागर को बहाया है? क्या वह आपको सुख व चैन से सोने देगी? भूल में हो।

अतः हे जाति के उद्धारक जवानो!

उस पापी पैसे को ठुकरा कर गुणवती, शिक्षित, सदाचारी गृहलक्ष्मियों का समादर करो। जिन सुशील गुणवती कन्याओं के

पिताओं के पास इतना दहेज देने के लिये नहीं हैं, उनको भी अपनाकर स्त्री जाति को ऊंचा उठाओ। इन अबलाओं का मानमर्दन अपना मानमर्दन समझो। देश की वीर प्रसूताओं का जगज्जननियों का अपमान अपना व देश का अपमान समझो। आप नवजवान भी इन का आदर न करेंगे तो कौन करेगा? आप भी समाज की अनवस्था को नहीं संभालेंगे तो कौन संभालेगा?

आप के अन्दर महान् शक्ति है। आप के खून में वह भारतीय वीरत्व भरा हुआ है जो संसार के महाशक्तिशाली आततायियों (दुष्टों) का भी समूलोन्मूलन कर सकते हो। आप उन भीष्म भीम और अर्जुन की सन्तान हैं जिन्होंने नारी जाति के अपमान को कभी सहन नहीं किया। जिन्होंने नारी के अनादर करने वालों को मिट्टी में मिला डाला। आप उन राम और कृष्ण की परम्परा हैं, जिन्होंने नारी के अपमान पर महाभारी युद्धों का आह्वान किया। आप उन यति लक्ष्मण व शिवाजी की संतान हैं जिन्होंने परस्त्री को कभी बुरी दृष्टि से आंख उठाकर देखा ही नहीं।

कहां गया वह आपका शुद्ध पवित्र व वीर रस से भरा टमटमाता हुआ खून? कहां गया वह संसार में परिवर्तन लाने वाला आपका अदम्य उत्साह व संगठन? कहाँ गई आपकी वह भारतीयता? कहाँ गई वह शीलता व पवित्रता?

क्या भारत पुनः इस महान् विकराल कराल काल रूप दहेज के लोभ से मुक्त नहीं होगा? क्या भारत पुनः इस कलंक से अपने को दूर नहीं करेगा? क्या भारतीय नवजवान समाज इन अबलाओं की दयनीय दशा पर आसूं नहीं बहाएगा? अपनी हृदय की कठोरता को नहीं तोड़ेगा? क्या भारत पुनः उस पवित्र परम वैभव पर नहीं पहुंचेगा? क्या भारत में पुनः उस सदाचारता व पवित्रता का पुनीत प्रवाह नहीं बहेगा? क्या भारत पुनः वीर,

धीर, महान्, विद्वान्, भक्त, ज्ञानी महापुरुषों को जन्म देने के लिये भावीमाताओं को उन्नत नहीं बनाएगा ?

याद रखो ! यदि इस प्रकार के अत्यन्त अत्याचार का प्रवाह बन्द नहीं हुआ, धन के लोभी दहेज की बोली बढाते रहे, अबलाओं के पिताओं का खून चूस कर पिताओं के जीवन सूर्य को छिपाने का प्रमाद पूर्ण-प्रयत्न होता रहा, लोभ का सिर ऊंचा उठता रहा तो समाज में एक दिन वह महान् भयंकर विप्लव आएगा जो सभी लोभियों के नस नस को कुचल कर ही शान्त होगा। ये देवियां उस दारुण दुर्गा का रूप धारण करेंगी जिसकी तेज हृदय की पुकार रूप तलवार से लोभियों के अभिमान के सिर उड़ते हुए नजर आवेंगे। यह भारतीय कुपित नारी उस भयंकर भवानी का रूप धारण करेगी कि जिसके केवल मुख मण्डल को देख कर ही संसार त्राहि त्राहि करके चिल्ला उठेगा। इन अबलाओं की आहें, उस विशाल दावानल का रुद्र रूप धारण करेंगी, जिससे संसार जलता पचता हुआ नजर आवेगा।

अतः हे संसार व स्वयं के हितचिन्तक जवानो ! ये देवियां वह रूप धारण न कर इससे पहले ही इनकी व संसार की शान्ति के लिये इस लोभ का बलिदान करो। इस दहेज की कुप्रथा का हवन करो। अपने कुत्सित मनोवेगों की बलि चढाओ और अपने जीवन को शान्त व सुखमय बनाओ। अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाओ। भारत में क्या संसार में पुनः पवित्रता, शीलता, उदारता, व मानवता का साम्राज्य स्थापित करो। पुनः इस भारत को वास्तविक भारत बनाकर संसार की गुरुपद्वी को संभालो।

देखा गया है कि जब जब संसार में परिवर्तन हुआ है तब तब उस परिवर्तन का उद्घाटन नवजवानों ने ही किया है। जब जब संसार में क्रान्ति आई है तब तब नवजवानों के ही चहरे उस क्रान्ति से कान्तिमान हुए हैं। जब जब किसी जाति वा देश का

उत्थान हुआ है तब तब अनुभवियों ने अपने अनुभव रूपी प्राणों को नवयुवकों के उत्साह रूपी शरीरों में भर कर ही कार्य का श्रीगणेश व इतिश्री किया हैं।

अतः आशा है कि नवजवान अपने मनोवेगों पर नियन्त्रण करके धन के लोभ में न फंस कर अपनी जाति व देश के लिये इस दहेज के भयंकर रोग को मूलतः नष्ट करने के लिये अपने लोलुप प्रवृत्तियों का बलिदान करने के लिये तय्यार हो जावेंगे। पुनः इस भारत को स्वस्थ बनाने के लिये, परम वैभव पर पहुँचाने के लिये कटिबद्ध हो कर कार्यक्षेत्र में अपनी लोभी भावनाओं का बलिदान करके दिखावेंगे।

और लड़कों के माताओं के प्रति तो मेरा प्रधान निदेदन है। इनके हाथों में दहेज का सूत्र है। ये यदि चाहें; तो दहेज की कुप्रथा को यमराज का घर दखना पड़े। वास्तव म अपने लड़कों की विक्रयवत् बोली बढाने की प्रथा इन माताओं से ही शुरु हुई है और ये ही इस को बढा रही हैं। क्योंकि इन विचारियों को यह बहुत कम पता रहता है कि पैसा कितना पसीने से कमाया जाता है। इनका तो काम केवल घर की रानी बन कर, वस्तुऐं खरीदना व खलास करना है। अतः मैं इन अनभिज्ञ अबलाओं के ऊपर, जानकर वा न जानकर कुठाराघात करने वाली, लड़कों की माताओं से यह निवेदन करता हूँ कि आप तो कृपा करक दहेज की लैंन दैंन के बारे में अपने मुख पर पट्टी बांध लिया करो। वैसे तो आप लक्ष्मीस्वरूप हो, किन्तु इस दहज के प्रसंग में इन कन्याओं के जीवन सुख का बलिदान लेने के लिये कराल काली का रूप धारन कर लेती हो। हे भवानीस्वरूपो ! हम आपको बार बार प्रणाण करते हैं कि कृपया इस कंगाल कलियुग के काल में तो दया करके शान्त हो जाओ।

प्रत्युत आपको तो यह प्रयत्न करना चाहिये कि एक गुणवती सदाचारिणी, घर के कार्य में कुशल, गीता, रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थ पढी हुई, अर्जुन व अभिमन्यु जैसे वीरों को जन्म देने वाली मीरा, तुलसी व सूर जैसे भक्तों का आविर्भाव करने वाली, तिलक, गांधी व जवाहर जैसे देश रत्नों को प्रसूत करने वाली, शुकदेव अष्टावक्र व शंकर जैसे रत्नों को अवतरित करने वाली, सासु व ससुर की सेवा करते हुए अपने पतिव्रत धर्म द्वारा घर को स्वर्ग बनाने वाली बहू आपके घर में आवे। वास्तव में 'जहां सुमति तहां सम्पत्ति नाना, के कथनानुसार जहां सुन्दर लक्षण हैं वहां लक्ष्मी तो अपने आप ही आती है। यदि लक्षणों की उपेक्षा करेंगे तो लक्ष्मी भी स्थाई नहीं रह सकती।

अतः मेरा पुत्रों की माताओं से यह साग्रह नम्र निवेदन है कि वे अपने व जाति के सुख के लिये, और कन्याओं की आहों से बचने के लिये इस दहेज की बोली को तथा दूसरों को दहेज का सामान दिखा दिखा कर इस बीमारी को फैलाने के निर्दय व अमंगलकारी कार्य को सदा के लिये बन्द करने के लिये अपने स्वार्थों का व नीच लोभ का बलिदान करें और समाज को उन्नत बनाने में हाथ बढावें।

कन्याओं के पिताओं से भी यह एक विशेष बात कहनी है कि आप लोग भी कृपा करके अब हवाई किल्ले बनाने छोड़ दो। अपनी कन्याओं के लिये उतने स्वर्ग के स्वप्न देखो जितने सत्य भी बन सकें। भला आप ही सोचो कि यदि प्रत्येक कन्या का पिता यह सोचे कि मेरी लड़की ऐसे घर में जाय जहां उसे कोई काम न करना पड़े। सामने तीन चार सेविकाएँ सदा हाथ बांध कर खड़ी रहें और जहां मेरी लड़की को सोने के लिये सदा स्वर्ण

के पलंग मिले, घर से बाहर विना मोटर के मेरी लड़की निकले ही नहीं, तो फिर इतने धनवान् राजा वर आवेंगे कहां से? तो फिर गरीब लड़के क्या विवाह करें ही नहीं? क्योंकि वे मोटर वाले नहीं अतः उन्हें विवाह का अधिकार ही नहीं ?

पता है आपके इस प्रकार गलत तरीके से सोचने का परिणाम क्या हो रहा है ? जहां शास्त्र यह कहता है कि पंद्रह वा वीस वर्ष के बाद कन्या यदि घर में कुमारी रह जाय तो वह पिता के पुण्य को पीने लगती है और उसके जीवनकली के विकसित होकर बार बार मुरझा जाने के पाप का बोझ बढता जाता है; वहां आज तीस तीस वर्ष की कन्याएँ कुमारी रह रही हैं । क्या यह समाज पर आपकी अनभिज्ञता के कारण, लोभ वश किए हुए प्रमाद के कारण, लगा हुआ महान् काला कलंक नहीं है।

अतः मेरी आपको यह रहस्य पूर्ण राय है कि अपने को पुण्यवान् सुखी व शान्त बनाने के लिए, पंद्रह वा वीस वर्ष के बाद जितना शीघ्र हो सके उतना शीघ्र अधिक धन व वैभव के सपने न देखकर, अपनी अबला कन्या के लिए आप को ऐसा वर खोजना चाहिये कि जो (१) शरीर व मन से स्वस्थ हो (२) सदाचारी व सुशील हो (३) कोई भी एक विद्या अवश्य पढा हुआ हो और (४) सादगी से जिसमें अपने घर चलाने की शक्ति हो। आशा है आप लोग थोड़े में इस संकेत को समझ कर, पहले के गलत तरीकों को छोड़कर, धनवानों और पाश्चात्य रंग में रंगे हुए केवल बी-ए एम-ए उपाधिधारियों के स्वप्नों को न देखकर किसी सदाचारी व अपनी उदरपूर्ति करने वाले स्वस्थ, शिक्षित वर की तलाश करके अपने को व कन्या को शान्त व सुखी बनावेंगे।

अन्त में एक नम्र निवेदन बहिनों से भी करूंगा। यद्यपि ये

अबलाएँ हैं, सामाजिक बन्धनों से बद्ध व विवश हैं, इन्हें पहिले तथा बाद में भी घर में ही रहकर राष्ट्ररत्नों को जन्म देना है; किन्तु आज कल के पाश्चात्य सभ्यता के प्रवाह में बहकर ये अबलाओं के स्थान पर प्रबलाएँ बन रही हैं, देशरत्नों के बजाय नग्न फैशन को जन्म दे रही हैं।

बहिनो! यदि आप यह सोचती हो कि आज के सामाजिक कुप्रथाओं से बचने के लिए, अपने पिताओं को दहेज के पंजे से छुडाने के लिए, दहेज न लेने वाले पतियों का आविर्भाव करने के लिये, नंगा व आकर्षक फ़ैशन आवश्यक है, तो यह तुम्हारी बडी भारी भूल है। चाहे कुछ ऐसे विवाह अपवादरूप से हो जायें परन्तु आज का युग बड़ा भयंकर है। आजकल का समय बड़ा दुष्ट व धोखा देने वाला है। आज के जमाने में चार दिन के चुलबुले व क्षणिक आनन्द में आकर स्थायी जीवन संबन्ध की प्रतिज्ञा को निभाने वाले बहुत थोड़े हैं। आज कल चारों तरफ रजो व तमोगुण का साम्राज्य छा रहा है। ये राजसी पाश्चात्य प्रणाली के प्रचारक, दूसरों के जीवनसत्व को लूटने में प्रवीण, मानवता व सदाचरता की हंसी उड़ाकर पशुता व असुरता का साम्राज्य संस्थापन करने में सेनानी, भारत के पवित्र भारतीयत्व को भंग करने के लिये, मानवता का संसार से समूलोन्मूलन करने के लिये, कुवासनावासितहृदय होने के कारण, व मानवता का संचार करने वाली भारतीय पवित्र वैदिक शिक्षा से नितान्त अनभिज्ञ होने के कारण, स्त्रीजाति के वास्तविक लज्जादिगुण संपन्न स्त्रीत्व को सदा के लिये संसार से नष्ट भ्रष्ट करने के लिये सतीत्व व पतिव्रत धर्म को पञ्चत्व प्राप्त कराने के लिये अवतरित ये यमराज के दूत, कहीं आप अबलाओं को इस संसार से विदा करवा कर यमराज के घर पहुँचाने के लिये विवश न कर डालें।

याद रखो! जितनी स्थिरता सत्वगुण में है उतनी रजोगुण में कदापि नहीं आ सकती। जितनी शान्ति सादगी में है उतनी फैशन से कभी प्राप्त नहीं हो सकती, इंगिलश सभ्यता व सिनेमाओं द्वारा प्राप्त हुई पाश्चात्य दैन यह फैशन, तुम्हारे अनेक मानसिक रोगों का महा व मुल कारण है। तुम्हारे हृदय की शुद्धता व ज्ञानशक्ति को नष्ट करने वाला महाशस्त्र है। तुम्हारे जीवन को विषैला बनाने वाला महासर्प है।

बहिनो! अब कुछ सावधान हो। क्या जीवन केवल दश पंद्रह वर्ष ही है? यदि स्थायीरूप से पवित्र गृहस्थ का सात्विक आनन्द प्राप्त नहीं करोगी तो यह दस पंद्रह वर्षों में नष्ट हो जाने वाला क्षणिक आनन्द तुम्हारे भावीजीवन को अशान्त व दुःखमय नरक बना डालेगा। अनन्त गर्भहत्याएं तुम से बदला चुकावेंगे।

ऐ भारत की भावी माताओ! वीर भक्त व देश रत्नों को जन्म देने वाली, जगज्जननी सीता व पार्वती की सन्तान वीर कन्याओ! यदि शास्त्रानुसार भी देखा जाय, यदि तुम्हारे पूर्वज ऋषियों के वचनानुसार भी देखा जाय तो तुम्हें श्रृङ्गार का अधिकार विवाह के बाद है विवाह से पहले ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए फैशन का बिल्कुल त्याग करके तुम्हें सादगी को स्वीकार करना पड़ेगा। किन्तु यदि रजोगुणी भोजन रजोगुणी सिनेमाएँ, रजोगुणी वातावरण में रहते हुए राजसी वेष पहनती रहोगी तो कभी भी, सौ जन्मों में भी ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकती। और जो कन्या विवाह से पहले अपने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करती वह कभी भी पतिव्रत धर्म पालन करके, घर को स्वर्ग नहीं बना सकती। वह कभी माता सती अनसूया व मदालसा आदि माताओं के आदर्श का पालन करके भारत को उज्ज्वल नहीं बना सकती। वह कभी भारतीय पतिव्रता नारी कहलाने का अधिकार नहीं रख सकती। वह कभी वीर,

घीर, भक्त व ज्ञानियों को जन्म देने वाली, जगज्जननी नहीं वन सकती।

अतः मैं आप भारत की भावीमाताओं से आशा रखता हूँ कि आप अपने कर्तव्य का पालन करती हुई, अपने भारतीय सनातन धर्म को धारण करती हुई, अपनें जीवन को सादा व पवित्र बनाकर भारत को उज्ज्वल बनाओगी।

अन्त में मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इन भारतीय भावी-माताओं का आदर करने के लिए, इन ज्ञानी, विज्ञानी, वीर, भक्त देश रत्नों को भविष्य में जन्म देने वाली कन्याओं का घोर अपमान सहन न करने के लिए, पुनः भारत को वह पवित्र सदाचारी भारत बनाने के लिये पुनः भारत को परम वैभव पर पहुँचाने के लिए जो यह 'सिन्धी समाज सेवा सम्मेलन' मनाया जा रहा है वह सफल हो। और प्रभु आप नवजवान व कन्याओं को तथा आपके माता पिताओं को वह सुमति व शक्ति प्रदान करे कि जिससे आप इन अबला कन्याओं का उद्धार करके, अपने को, ऋषि ऋष से मुक्त करके भारत को उज्ज्वल बनावें। ॐ शम्

❀ शुभ सूचना ❀

भारतीय वेदान्त दर्शन के हिन्दी साहित्य में [illegible] श्रीनिश्चलदासजी-कृत 'श्री विचार सागर' एक [illegible] ग्रन्थ [illegible] इसमें पुरातन भाषा व शैली के कारण छिपे हुए, [illegible] गंभीर [illegible] रूपी रत्नों को दर्शाने के लिये, उसके वास्तविक प्रतिविम्ब को झलकाने के लिये, दर्पणवत् **'श्रीविचारसागरदर्पण'** नामक पुस्तक, श्रीवेदान्त-प्रचारमण्डल- अजमेर द्वारा प्रकाशित हुई है।

जिसमें खड़ी भाषा व आधुनिक शैली में सिनेमा व लाईट आदि के वैज्ञानिक दृष्टान्तों द्वारा वेदान्त के मर्मों के उद्घाठन का काफी सफल प्रयत्न किया गया है। तथा स्थल स्थल परं गीता रामायण, पञ्चदशी, स्मृति व वेद आदि के प्रमाण देकर ग्रन्थ की प्रामाणिकता को स्पष्टतया झलकाया गया है। अतएव जो उस परम रहस्यमय सत्य को पहचानने के इच्छुक हैं उन्हें यह ग्रन्थ अपैना मार्ग दर्शाने में काफी सहायक सिद्ध हो रहा है। आशा है जिज्ञासु जन इस अपूर्व ग्रन्थ का अध्ययन करके अपनी ज्ञान - पिपासा को शान्त करेंगे।

ग्रन्थ पक्के जिल्द से व रंगीन चित्रों सहित लग भग ४०० पृष्ठों का है। भेंट केवल २ दो रुपया है।

मिलने का पता :—

Sobhraj Pesumal
1/5 Western Rly Quarters
Matunga W. Rly, BOMBAY-19.

अथवा:— **Shree Phulchandji**
Rajputana Electric Works
Kaiserganj, AJMER

...होंगे तथा खेलमें दर्शकों की रुचि और बढ़ेगी।

श्री डालमियाने बीते मंगलवारको लंदनके लार्ड्समें क्रिकेटके शीर्ष अन्तरराष्ट्रीय निकायका अध्यक्ष पद ग्रहण किया। किसी भी एशियाईको पहली बार यह गौरव हासिल हुआ है।

पदभार संभालनेके बाद श्री डालमियाकी उस घोषणासे भविष्यमें ठोस आधार एवं परिवर्तनका संकेत मिलता है, जिसमें उन्होंने कहा कि परिषदके प्रबंधनका नया युग शुरू हो चुका है। स्वयं श्री डालमिया सर्वसम्मतिसे अध्यक्ष चुने जानेसे परिषदके दृष्टिकोणमें परिवर्तनका आभास मिलता है। देरसे ही सही मगर

मणिपुर सरकार की
20.6.97 को सम्पन्न डेली लाटरियों के परिणाम

लाटरी का नाम	ड्रा समय	प्रथम पु. नं.
राजरेखा रॉयल मार्निंग	12.30 P.M.	186741
राजरेखा रॉयल रोजाना	3.00 P.M.	241828

परिणाम सरकारी गजट से मिला लें
मेन स्टाकिस्ट : पी.के. एंटरप्राइजेज
फोन : वाराणसी : 222480
लुधियाना : 742271, 745471

नागालैंड सरकार की 25 डेली लॉटरियाँ
20.6.97 को सम्पन्न लॉटरियों के परिणाम

नको आखिर मान्यता मिल

रिषदके नये अध्यक्षके रूपमें
ढांचेमें पूर्ण परिवर्तनकी
य निर्णय लेनेकी प्रक्रियामें
ध ही क्रिकेटकी परंपराओंको
ढालना है।

...की

रके उद्देश्यसे तीन नयी
णाकी। ये क्रिकेट समिति
पणन समिति हैं।
त्वपूर्ण घोषणा यह की कि
के कप्तानोंकी लंदनमें ११
जायेगी जिसमें उनकी इस
गी कि क्रिकेट मैच बहुत
क्षने टेस्ट और अंतरराष्ट्रीय
निश्चित करनेका भी निर्णय
क्रिकेटमें दर्शकोंकी रुचि
जायेंगे।
बोर्डका भी पुनर्गठन किया
विश्व प्रतियोगिता आयोजित
ध्ययन कर रहा है। इस
य करनेके लिये उपसमिति

याने परिषदका मुख्यालय
से इनकार किया, लेकिन
कलकत्तासे काम करेगा।
कारी बोर्डकी बैठक भी
सम्बरको होगी। इस तरह
लंदनसे बाहर होगी।
क्ष बननेसे यह उम्मीद भी
कालमें क्रिकेटका व्यापक
मितिने बंगलादेश और
अंतरराष्ट्रीय और प्रथम
नये अध्यक्षने कहा कि
न दोनों देशोंके मैचोंपर
तथा अगले वर्ष परिषदके
र्जा देनेकी उनकी मांग पर

कि जिनके पास सुविधाएं
की मान्यतापर भी विचार.

...न ड्रॉ के परिणाम	
ड्रॉ समय	प्रथम पुरस्कार नं.
...30 A.M.	247065
...00 A.M.	240891
...30 A.M.	314311

किया जायेगा। परिषद अब खासतौरपर उत्तरी अमेरिकामें क्रिकेट विकसित करना चाहती है।

भारतीय बैडमिण्टन परिसंघ

बैडमिन्टन- बैडमिंटनके क्षेत्रमें इस सप्ताह एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाक्रममें पूर्व आल इंग्लैंड चैंपियन प्रकाश पादुकोणने भारतीय बैडमिंटन संघके समानांतर और उसके प्रतिद्वंद्वी भारतीय बैडमिंटन परिसंघकी स्थापना कर दी। पादुकोणका कहना है कि कई दशकोंसे भारतीय बैडमिंटनकी खस्ता हालत है खेलसे जुड़े लोगोंने इसमें जान डालनेकी कोशिशकी लेकिन उनके प्रयास विफल कर दिये गये। उन्होंने खेलको बिल्कुल नयी दिशा देनेके उद्देश्यको लेकर गत बुधवारको परिसंघकी स्थापनाकी। परिसंघकी स्थापना खिलाड़ियों और भारतीय बैडमिंटन संघके बीच सुलग रहे असंतोषकी परिणति है। आलोचकोंका कहना है कि संघके निरंकुश रवैयेके चलते राज्य संघों खिलाड़ियों और अधिकारियोंको बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है।

करीब दस दिन पहले कर्नाटक बैडमिंटन संघने भारतीय बैडमिंटन संघसे सम्बद्धता समाप्त कर दी थी। खिलाड़ियोंने अपने हितोंके कल्याण संघ गठित करनेका ... भारतीय बैडमिंटन संघसे खि... शिकायतोंमें से प्रमुख यह थी कि ... नहीं दी गयी।

पादुकोणका कहना है ...

भारतीय...

परिसंघको अनेक राज्य संघोंका ... परिसंघ अब सभी सम्बद्ध नि... रूपसे संपर्क कर रहा है।

फिलहाल परिसंघकी योज... मिनी और वेटरन राष्ट्रीय प्रतियो... रैंकिंग टूर्नामेंट और विभिन्न र... राशि वाली प्रतियोगितायें आ... परिसंघकी जूनियरके लिए अ... योजना है। इनके अलावा परिसं... अधिकारियोंको अक्सर विदेश ... बनायी है। उम्मीद की जा रही है ...

मारकण्डेयको दोहरा खि...

वाराणसी, २० जून। मारकण्डेय यादवने आजसे यहां गंगामें आरम्भ हुई सरस्वती स्वीमिंग असोसियेशनकी तैराकी प्रतियोगिताके पहले दिन दोहरी सफलता अर्जित की। उसने ओपन वर्गमें केदारघाटसे दरभंगाघाट तक तैराकी स्पर्धाके अलावा १०० मीटर बटर फ्लाईमें प्रथम स्थान प्राप्त किया।

शुक्रवारको विभिन्न स्पर्धाओंमें क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले तैराकोंके नाम इस प्रकार रहे-

केदारघाट से दरभंगा घाट तक- मारकण्डेय यादव, दीपक गुप्त, (सरस्वती स्वीमिंग), संतोष कुमार (मिर्जापुर), १०० मीटर बैक स्ट्रोक, अभय कुमार मौर्य (मिर्जापुर), मारकण्डेय यादव (सरस्वती स्वीमिंग), शशीकान्त श्रीवास्तव (मिर्जापुर), १०० मीटर बटरफ्लाई, मारकण्डेय यादव, दीपक गुप्त, गजेन्दर सिंह, (सभी सरस्वती स्वीमिंग)। संस्थाके बच्चोंकी तैराकी (बालक ग्रुप एक), देवकाश सरकार, अरुण कुकटेजा, अवनीत गुप्त।

ग्रुप तीन बालक-राज... केशवानी, अजय सरकार।

बालक ग्रुप ६-संदी... अग्रवाल, अतुल मलहोत्रा।

बालक ग्रुप ८-जितेन्द्र ... मेधनानी, सौरभ चटर्जी।

बालिका ग्रुप एक-तनुश्री ... रानी नाग, निवेदिता चौधरी।

बालिका ग्रुप दो-मीना ... चटर्जी, सुनीता बोस।

बालक ग्रुप-२-हिमांशु ... खानचंदानी, कुलदीप चटर्जी।

राष्ट्रीय खेल अगले सा...

इम्फाल, २० जून (वा.) ... खेल मणिपुरकी राजधानी इम्... अप्रैलमें होंगे। यह जानकारी ... दी। संजय सरकार राष्ट्रीय ... अधिकारियां समेत करीब छः ... ठहरनेकी व्यवस्था कर रही है ...

रेखा सीरीज [illegible]	ड्रॉ समय	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]